टिप्पणी

(ख)

हरियाणवी लोक गीत

इस प्रकार के लोकगीत सामाजिक शिक्षाप्रद गीतों की श्रेणी में आते हैं जिनमें दी गई शिक्षा को अगर हम असल जीवन में उतारें तो वह हमारे लिये बहुत फायदेमंद तो साबित होती ही है, हम उन बहुत सारी परेशानियों से भी बच जाते हैं जो हमारे जीवन में आती हैं। इन गीतों का गायन हर मौसम व हर उत्सव पर किया जाता है। बच्चे, जवान व बूढ़े इन गीतों को बड़े चाव से सुनते हैं। इस गीत का भाव इस प्रकार है कि ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बार-बार भी दी जाए तो भी वह उसे ठीक से नहीं अपनाता, पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में अपना जीवन व्यर्थ गंवा देता है तथा उस शिक्षा से प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित रह जाता है।

हरियाणवी लोक गीत

ज्ञान की बाते सुणे ज्ञानी तो समझे एक इशारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

कैरा माणस काला ढोरी घर पाछे ने मोरी हो।
उस लाठी का नहीं भरोसा जिसकी लाम्बी पोरी हो।
सास बहू ते झगड़म झगड़ा नहीं काम की गोरी हो।
घर क्यां ने समझानी चाहिये जो बड़बोला छोरी हो।।
भाई-भाई रहें झगड़ते सबकी गाली खाते हैं।
नुगरा मानस जागे कोन्या सौ सौ रूकै मारे तै।

भगवां बाणा धारण करके न्यूं के साधु होए आ केरे।
कोई कोई साधु वो बणज्या जो घर ते बाधु हुआ करैं।
बिना भजन का साधू तै एक टट्टू लादू हुआ करै।
असली साधु धोरे हरिभजन का जादू हुआ करै।
भक्ति भाव बिना कनफाड़े मांगें टूक द्वारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

टिप्पणी

हरियाण्वी लोक गीत

स्वरलिपि

ताल - कहरवा - (8 मात्रा)

स्थायी

X				0			
				पप	पप	ध ध	पमग
				ज्ञान	की बात	सुनै	ज्ञानी तो
गमप	मग	रेग	रेस	ग ग	रे स	नि ध	सासा
समझै	एक	इशारे	तैऽ	नुगरा	मानस	मानै	कोन्या
सरे	गम	गसरे	गस				
सौसौ	रुके	मारेऽ	तैऽ				

अन्तरा 1

				पप	पप	पप	पप
				कैरा	माणस	काला	ढ़ोरी
पध	धनि	धप	न	मम	मम	मम	मम
घर	पाछे	नमोरी	हो	उस	लाठी	कानहीं	भरोसा
गम	मप	मम	म				
जिसकी	लाम्बी	पोरी	हो				

अन्तरा 2

				ग ग	ग ग	रेग	ग ग
				सास	बहु	तैझग	ड्मझगड़ा
सरे	रेग	रेस	स	गम	गग	रेग	गग
नही	कामकी	गोरी	हो	घरक्यां	नेसम	झाणी	चाहिये
सरे	रेग	रेस	स				
जोबड़	बोला	छोहरी	हो				

टिप्पणी

अन्तरा 3

				पप	पप	धध	पमग
				भाई	भाई	रहैझग	ड़ते
गमप	मग	रेग	रेस	गग	रेस	–	–
सबकी	गाली	खाते	हैंऽ	नुगरा	माणस	–	–

अन्तरा 4

X 0

				पप	पप	पप	पप
				भगवा	बाणा	धारण	करके
पध	धनि	धप	मा				
न्यूके	साधु	हुया	करै				
				मम	मम	मम	मम
				कोई–2	साधु	वो बण	ज्याजो
गम	मप	मम	मा				
धरपै	बाधु	होएआ	करै				

अन्तरा 5

0

				ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
				बि ना	भजन	का साधु	नै एक
X							
सारे	रे गा	रे सा	स	ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
टट्टू	लाटू	हुआ	करै	असली	साधु	धोरे	हरि
सारे	रेगा	रेसा	स				
भजन	का जादू	हुआ	करै				

अन्तरा 6

0

				पप	पप	धध	पम
				भक्ति	भाव	बिना	कनफाड़े
X							
गम	मग	रेसा	रेसा	ग ग	रेस		
मांगेंऽ	टूक	द्वारे	तैऽ	नुंगरा	माणस		

पाठगत प्रश्न 6.2

1. ''ज्ञान की बात सुणे ज्ञानी'' इस गीत का सारांश लिखिए।
2. ''ज्ञान की बात सुने ज्ञानी'' यह गीत किस मौसम में गाया जाता है।
3. इस प्रकार के लोक गीत किस वर्ग में आते हैं? लिखिए।